ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 14 अंक 8 कुल पृष्ठ-8 15 से 21 नवम्बर, 2018 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853119 सम्वत् 2075 का.शु.-07

मानव सेवा प्रतिष्ठान के तत्वावधान में छात्रवृत्ति एवं प्रतिभा पुरस्कार समारोह का आयोजन भव्यता के साथ सम्पन्न

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया उद्घाटन

मानव सेवा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली एवं नार्थ अमेरिकन जाट चेरिटी (ट्रस्ट) के संयुक्त तत्वावधान में छात्रवृत्ति एवं प्रतिभा पुरस्कार का भव्य कार्यक्रम 4 नवम्बर, 2018 को दीनबन्धु सर छोटूराम भवन, केशवपुरम, दिल्ली में सम्पन्न हुआ। समारोह का उद्घाटन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने ओजस्वी उद्बोधन से किया। जाट मित्र मण्डल दिल्ली के प्रधान श्री आजाद सिंह लाकड़ा ने अध्यक्षता की तथा नार्थ अमेरिकन चेरिटी के प्रधान श्री राम स्वरूप आर्य मुख्य अतिथि रहे। उनके अतिरिक्त आर्य समाज नीदरलैंड के प्रधान श्री अमरीश तिवारी, चौ. रणवीर सिंह विश्वविद्यालय जीन्द के उपकुलपति डॉ. राजवीर सिंह, डॉ. सोहन वीर सिंह, डॉ. अजय कुमार जे.एन.यू., डॉ. अनिल दलाल, डॉ. अमर कौर आर्या, श्री जसवीर सिंह मलिक, डॉ. संतोष आर्या–अमेरिका, मा. रामकुमार गहलोत, श्री बलजीत सिंह, श्री राजवीर शास्त्री, श्री दयानन्द देशवाल आदि महानुभावों ने भी मंच की शोभा बढ़ाई।

प्रातःकाल यज्ञ का बहुत सुन्दर संयोजन प्रसिद्ध विदुषी डॉ. सुकामा आचार्या के ब्रह्मत्व में हुआ। कन्या गुरुकुल रुड़की, जिला–रोहतक की ब्रह्मचारिणियों ने सस्वर वेदपाठ के द्वारा पूरे वातावरण को वेदमय बनाकर उपस्थित यज्ञ प्रेमी महानुभावों को आह्लादित किया। यज्ञ के मुख्य यजमान के रूप में दीनबन्धु छोटूराम भवन के मंत्री श्री नरजीत सिंह छिकारा ने सपत्नीक यज्ञ में भाग लिया। पूरे कार्यक्रम को श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् के प्रधान एवं गुरुकुल गौतमनगर के प्रधान स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

प्रतिवर्ष की भांति मानव सेवा प्रतिष्ठान की ओर से इस वर्ष गत दिनों गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार में सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन में 40 वैदिक विद्वान् एवं विदुषियों का सम्मान किया गया था तथा 4 नवम्बर, 2018 को छोटूराम भवन, केशवपुरम, दिल्ली में आयोजित इस छात्रवृत्ति एवं प्रतिभा पुरस्कार समारोह में निर्धन, निराश्रित एवं मेधावी छात्र–छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान करके अत्यन्त प्रशंसनीय कार्य किया है। विदित हो कि मानव सेवा प्रतिष्ठान के इस परोपकारी कार्य में अपने आपको सहभागी बनाते हुए नार्थ अमेरिकन जाट चेरिटी ने भी बहुत बड़ी धनराशि निर्धन मेधावी छात्र–छात्राओं को उनकी उच्च शिक्षा के लिए देने का संकल्प किया और इस वर्ष इन दोनों संस्थाओं ने लगभग 22.5 लाख रुपये की धनराशि बाँटकर सैकड़ों छात्र–छात्राओं का उत्साहवर्द्धन किया है। मानव सेवा प्रतिष्ठान सन् 1998 से सामाजिक कार्यों में संलग्न है। इस कार्य में उन्हें अनेक प्रतिष्ठित सहयोगियों एवं प्रतिष्ठित संस्थाओं का सहयोग प्राप्त हो रहा है जिसके कारण ये संस्था इस महत्त्वाकांक्षी कार्ययोजना को मूर्त रूप देने में सफल हो रही है।

इस आयोजन का उद्घाटन करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने दीनबन्धु सर छोटूराम जी की प्रेरणादाई घटनाओं पर मार्मिक प्रकाश डाला और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन से उन्हें किस प्रकार नई दिशा मिली इस पर अपने भावुकतापूर्ण विचार प्रस्तुत किये तो श्रोताओं ने तालियों की गड़गड़ाहट के साथ उनका समर्थन किया। स्वामी आर्यवेश जी ने छात्र–छात्राओं को प्रेरित किया कि वे जहाँ छात्रवृत्ति लेकर अपने जीवन को उच्च शिक्षा के द्वारा योग्य एवं गुणवान बनायें वहीं महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेकर जीवन में पवित्रता, समाजसेवा, ईमानदारी, देशभक्ति एवं नैतिकता आदि गुणों को अपनाकर श्रेष्ठ मनुष्य बनने का संकल्प लें। स्वामी आर्यवेश जी ने देश–विदेश से आये सहयोगियों एवं गणमान्य महानुभावों की भी इस महत्त्वपूर्ण कार्य में सहयोग देने के लिए प्रशस्ति की तथा मानव सेवा प्रतिष्ठान के पदाधिकारियों श्री चन्द्रदेव शास्त्री प्रधान, श्री रामपाल शास्त्री कार्यकर्ता प्रधान, श्री सोमदेव शास्त्री वरिष्ठ उपप्रधान, श्री हरवीर शास्त्री उपप्रधान, डॉ. कंवर सिंह शास्त्री महामंत्री, श्री संजय कुमार मंत्री, श्रीमती कमलेश उपमंत्रिणी, श्रीमती ऊषा आर्या कोषाध्यक्षा, श्रीमती शीला देवी सदस्या आदि को इस सफल आयोजन एवं मानव सेवा के महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम के लिए साधुवाद एवं बधाई दी। कार्यक्रम का सम्पूर्ण संचालन मानव सेवा प्रतिष्ठान के प्राण श्री रामपाल शास्त्री जी ने किया।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

विज्ञान की कसौटी पर यज्ञ प्रक्रिया

– वेद प्रकाश गुप्ता

प्रस्तुत लेख के यशस्वी लेखक श्री वेद प्रकाश गुप्ता जी विज्ञान के अच्छे ज्ञाता हैं, इसके अतिरिक्त आप विद्वान् तथा आर्ष साहित्य के पठन–पाठन व स्वाध्याय में विशेष रुचि रखते हैं। विद्वत्वर्ग से अनुरोध है कि यज्ञ पर आपके शोध को ध्यान से पढ़कर सत्यासत्य का निर्णय करें तथा समस्त शंका–समाधान आपके निम्न पते पर करने की कृपा करें। – सम्पादक

यज्ञ का लक्ष्य :– प्रायः लिखा व कहा जाता है कि यज्ञ एक विज्ञान आधारित निष्काम कर्म है। सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास 3 में यज्ञ के पक्ष मे लिखित प्रश्न के उत्तर में स्वामी दयानंद जी ने लिखा है, "उत्तर – जो तुम पदार्थ विद्या जानते तो कभी ऐसी बात न कहते। क्योंकि किसी द्रव्य का अभाव नही होता। देखो, जहाँ होम होता है वहां से दूर देश मे स्थिति मनुष्यों को नासिका से सुगधं का ग्रहण होता है वैसे दुर्गधं का भी। इतने से समझ लो कि अग्नि में डाला गया पदार्थ सूक्ष्म हो के फैल के वायु के साथ दूर देश में जाकर दुर्गधं की निवृति करता है।" इससे विदित होता है कि यज्ञ का ध्येय, लक्ष्य घृत एंव हव्य के मूल रसायनों को सूक्ष्म रुप यानी वाश्प यानी वायुरुप में परिवर्तित कर हवा में फैलाने का है जो सुगंधित एंव नासिका से ग्रहण करने योग्य हों। यह बात विज्ञान एंव प्रत्यक्ष प्रमाण के अनुसार भी सर्वथा उचित है। ऐसा ही लक्ष्य यजुर्वेद मंत्र 3/4 "उप त्वाग्ने ..... समिधो मम्।" के भावार्थ में स्वामी दयानदं जी ने पुस्तक "यजुर्वेदभाषाभाष्य" में लिखा है कि "मनुष्य लोग जब इस अग्नि में काष्ठ घी आदि पदार्थों की आहुति छोड़ते हैं तब वह उनको अतिसूक्ष्म करके वायु के देशातंर को प्राप्त कराके दुर्गधांदि दोषों के निवारण से सब प्राणियों को सुगंध देता है। ऐसा सब मनुष्यों को जानना चाहिये।" इससे भी यज्ञ के ऊपर लिखे तीनों लक्ष्यों की पुष्टि होती है।

यज्ञ प्रक्रिया में त्रुटि एंव सुधार की संभावना :– सही सत्य सर्वलाभदायक पुण्यमय कर्म करते रहने के लिये आर्य समाज में निम्नानुसार 3 आदेश निर्देश हैं, पहला– आर्य समाज के 10 नियमों में से, नियम 4 "सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए," तथा नियम 5 "सब काम धर्मानुसार अर्थात सत्य और असत्य, लाभकारक और हानिकारक होने का विचार करके करना चाहिए"। दूसरा– स्वामी दयानंद जी ने सत्यार्थ प्रकाश पुस्तक के भूमिका के दूसरे पृष्ठ में लिखा है कि "हाँ जो वह मनुष्यमात्र का हितैषी होकर जनावेगा? उसको सत्य सत्य समझने पर उसका मत सग्रंहीत होगा।" एंव तीसरा– सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास 3 में लिखा है "जैसे ऋग, यजुः, साम और अथर्व चारों वेद ही ईश्वरकृत हैं। वैसे ऐतरेय, शतपथ, – ये चार वेदों के उपवेद इत्यादि सब ऋषि–मुनि के किये ग्रथं हैं। इनमें जो– जो वेद विरुद्ध प्रतीत हों, उस–उस को छोड़ देना।" अतः गलतियां, भूल चूक, हमसे आपसे किसी भी ऋषि मुनि से भी अनजाने में हो सकती है। अतः त्रुटियों का ज्ञान में आते ही सुधार किया जाना अनुमन्य एंव अतिआवश्यक है। त्रुटियों का निवारण कर, इसके पालन करने के लिये प्रत्येक मनुष्य स्वयं स्वतत्रं, समर्थ एंव सक्षम हैं।

दहन एंव वाष्पन में अंतर – किसी भी ज्वलनशील पदार्थ के ज्वलन एंव वाष्पन में बहुत अंतर होता है। वाष्पन की क्रिया में पदार्थ में विद्यमान उड़नशील यानी वाष्प बन सकने वाले घटक जब ज्वालारहित अग्नि के संपर्क में आते ही गर्म होने लगते हैं। जब वाष्पन तापमान तक गर्म हो जाते हैं तब वह वाष्प यानी गैस बनकर हवा में चहुँ ओर फैलने लगते हैं। यदि इन वाष्पों को एकत्रित कर पुनः ठंडा कर दिया जाय तो वह वाष्प से बदल कर मूल रसायनों के ठोस या तरल रुप में वापस हो जाते हैं। अतः वाष्पन क्रिया परिवर्तनीय होती है। दहन यानी ज्वलन की क्रिया में पदार्थ का तापमान "ज्वलन तापमान" से बढ़ने पर उस पदार्थ के रसायन हवा के घटक आक्सीजन गैस से रसायनिक क्रिया करने लगते हैं जिसमें कार्बनडाइआक्साईड गैस, जल वाष्प तथा गर्मी यानी ताप ही उत्पन्न होते हैं जिससे मूल रसायनें समाप्त होकर अन्य रसायनों में परिवर्तित हो जाती हैं जो हानिकारक होती हैं। यह क्रिया परिवर्तनीय नही होती है। विज्ञानी जानते हैं कि जब भी कोई पदार्थ चाहे वह सुगंधित हो या दुर्गधिंत हो, पुष्टकारक हो या रुग्ण बनाने वाला हो, अमृत हो या जहर हो, मीठा हो या कड़ुवा हो, औषधीय हो या रोगकारक हो, को जब ज्वालायुक्त अग्नि में डाला जाता है तब इन रसायनों का ज्वलन यानी दहन होता है तब यह रसायनें हवा के घटक आक्सीजन के साथ रासायनिक क्रिया करती हैं जिसके फलस्वरुप कार्बन डाईआक्साइड गैस बनती है जो वायु को दूषित करती है। यह गैस रगंहीन, गंधहीन होती है। इसके साथ कुछ अन्य गैसें, थोड़ा जल वाश्प के रुप में एंव उष्मा, प्रकाश आदि भी पैदा होती हैं। किसी भी पदार्थ के ज्वलन से कोई सुगंधित, पुष्टकारक, मीठा, औषधीय गैस हवा में नही फैलती है जो नसिका से ग्रहण करने योग्य हो। इसका कोई अपवाद नही हो सकता है क्योंकि यह सभी पदार्थ एंव अग्नियाँ जड़ होती जिनके गुण एंव व्यहार एक समान ही होते हैं। हम यह तथ्य अपने दैनिक जीवन में प्रतिदिन प्रत्यक्ष प्रमाण में देखते व सत्यापित करते हैं। प्रचलित ज्वालायुक्त यज्ञ में समिधा, घृत एंव हव्य के दहन होने से यही हानिकारक गैसें हवा में फैलती है।

यज्ञ विज्ञान की पुस्तकें एंव शोध पत्रिकायें – यज्ञ प्रक्रिया एंव यज्ञ महिमा पर कई पुस्तकें है, परतुं मेरे ज्ञान में वैज्ञानिक आधार पर दो पुस्तकें, यज्ञ चिकित्सा पर कई पुस्तकें एंव कई सस्थाओं जैसे गायत्री परिवार हरिद्वार, गुरुकुल कागंड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार एंव राष्ट्रीय वनस्पति शोध संस्थान लखनऊ आदि की शोध पत्रिकाएं हैं। इन सभी पुस्तकों के लेखकों एंव शोध कर्त्ताओं ने यज्ञ से होने वाले लाभों के लिये देशी घी एंव हव्य के मूल रसायनों से मिलने वाले लाभ के लिये "सामग्री अध्याय" लिखा है जिससे इन सभी पुस्तकों के लेखकों एंव शोध कर्ताओं को पता था कि घी एंव हव्य के मूल रसायन अमृत तुल्य हैं, फिर भी इन सभी ने प्रचलित प्रक्रिया को प्रतिपादित करते हुए लौयुक्त यज्ञ हेतु "दहन अध्याय" भी लिखा है तथा दहन होने से बनने वाले हानिकारक जहरीले रसायनों को ही लाभदायक लिखा है जो एक विडंबना एंव भयकंर त्रुटियाँ, विसगंतियाँ हैं जिनका ही सुधार किया जाना है।

रसायनशास्त्री डा. राम प्रकाश जी द्वारा लिखित पुस्तक "यज्ञ विमर्श" तथा डा॰ स्व॰ सत्य प्रकाश जी द्वारा लिखित पुस्तक "केमेस्ट्री इन यज्ञा",

यज्ञ चिकित्सा की पुस्तकों एंव शोध पत्रों में लिखे विवरणों के अनुसार "ज्वालारहित अग्नि" के वाष्पयुक्त यज्ञ से हवा में जो रसायनें यानी गैसें हवा में फैलती हैं, उनमें देशी घी के 10 घटक रसायनें – औलिक अम्ल, पामिटिक अम्ल, स्टिऐरिक अम्ल, मिरिस्टिक अम्ल, लीनोलीईक अम्ल, ब्यूटिरिक अम्ल, लैरिक अम्ल, कैप्रिलिक अम्ल, , हेक्सानोइक अम्ल, ग्लिसराल एंव कपूर के 8 घटक रसायनें – यूजिनाल, पइनीन, सीनिओल, सैफ्रोल, टर्पिनिआल डाइपैंटीन, सेस्क्वीटरपीन, फैलेड्रीन और अन्य हव्य सामग्रियों के 10 घटक रसायनें – एंथाल, बेारनिओल, थायमाल, फुरफुराल, सैंटालाल्स, मिरिस्टिक, सेड्राल, काउमैरिक अम्ल, कारवाक्राल, सैफ्रोल तथा गुग्गुल, अनाजों, मिष्ठानों आदि सामग्रियों के कुल लगभग 100 रसायनें पूर्ण मात्रा यानी इनमें कुछ भी नष्ट नही होती, हवा में फैलती हैं। इनमें रोगाणुनाशक 24, सुगंधित 14, औषधीय 9, कीड़ों को भगानेवाला 3, कवकनाशक 11, कीड़ानाशक 3, कफ नाशक 4, दर्द नाशक 3, सूजन नाशक 4, घाव भरनेवाला 3, मरोड़नाशक 2, मूत्रवर्धक 2, पाचन बढ़ाने वाला 2, दिमाग को शांत करने वाला 2 एंव एक भी रसायन जहरीला व नशीला जहर, तीखा गंध बदबूदार गंधवाल , त्वचा गला व आंख मे जलन व घाव करने वाला रसायन नही हैं।

उपरोक्त यज्ञ विज्ञान की पुस्तकों एंव शोध पत्रों में लिखे विवरणों के अनुसार, प्रचलित "ज्वालायुक्त" यज्ञ से कौन से कितने–कितने रसायन उतपन्न होते हैं का अनुमान करना कठिन है क्योंकि (क) यज्ञकुण्ड में तापांश समान नही रहता । तापांश भिन्नता के कारण एक ही हव्य द्रव्य भिन्न–भिन्न पदार्थ बना सकता है। (ख) यह भी सम्भव है कि रसायनिक क्रिया पूर्ण होने से पूर्व ही जो पदार्थ बने है, वे आपस मे मिलकर कोई अन्य पदार्थ बना ले या उड़कर वायु में मिल जाएँ। (ग) यह आवश्यक नही कि प्रत्येक आक्सीकरण सदा पूर्ण ही हो जाए, क्योंकि वायु की मात्रा न्यूनाधिक होती रहती है। फिर भी यज्ञ के द्वारा उत्पन्न होने वाले पदार्थो का अनुमान तो लगाया ही जा सकता है। हां, यह निश्चय करना कठिन है कि कितनी सामग्री डालने से कौन–सा पदार्थ कितनी मात्रा में उत्पन्न होगा। जिन रसायनों के बनने का अनुमान है वह हैं, कार्बन डाइआक्साइड गैस, ग्लिसर ऐल्डिहाइड, ग्लिसरिक अम्ल, ग्लाई आक्सल, पाइरूविक एलड़ीहाइड, एक्राइलिक अम्ल, एथीलीन, प्रोपेन, टार्टरोनिक अम्ल, ग्लाइकाल एलडीहाइड, कैप्रोनिक एल्डीहाइड, वैलेरिक एल्डीहाइड, बूटेन, ईथेन, एसीटिक अम्ल, मिथैन, बूटाडीन, मीसोआक्सैलिक अम्ल, आक्सैलिक अम्ल, हाइड्रोक्सी प्रोपिआनिक अम्ल, मिथाइल एलकोहल, ग्लाइकालिक अम्ल, एक्रोलीन, फार्मालडिहाइड, कार्बोनिक अम्ल, इथनाल अलकोहल, ग्लाइकालिक अम्ल, फार्मिक अम्ल, एसीटालडहाइड़, एसीटिलीन, एसीटोन, ग्लाईनाल, कुल 32 है जिसमे मुख्यतयाः लगभग 90–95 प्रतिशत कार्बन डाईआक्साइड गैस बनता है, जो रगंहीन, गंधहीन हवा को दूषित करने वाला होता है, बाकी 5– 10 प्रतिशत में अन्य गैसें बनती हैं। इन समस्त गैसों में रोगाणुनाशक 3, सुगंधित रसायन 1, औषधीय 2, कीड़ों को भगानेवाला 2, कवकनाशक 2, कीड़ानाशक 2, घाव भरनेवाला 1, जहरीला व नशीला जहर 5, तीखा गंध 1, बदबूदार गंध 5, त्वचा, गला व आंख मे जलन व घाव करने वाले 3 रसायन हैं एंव एक भी कफ नाशक, दर्द नाशक, सूजन नाशक, मरोड़नाशक, मूत्रवर्धक, पाचन बढ़ाने वाला, दिमाग को शांत करने वाला रसायन बिलकुल नही हैं।

ज्वालारहित अग्नि मे यानी वाष्पयुक्त यज्ञ में जिन पदार्थों की आहुतियाँ दी जाती है, उन सब में स्थिति समस्त उड़नशील पदार्थ की पूर्ण मात्रायें वाष्प बन कर हवा में फैलती हैं, कुछ भी नष्ट नही होती हैं। अतः उपरोक्त विवरणों के आधार पर, "ज्वालारहित यज्ञ" से हवा में फैलने वाले रसायनों, गैसों की लाभदायक गुणों एंव मात्राओं की तुलना करने पर हम पाते हैं कि "ज्वालारहित यज्ञ" से, समस्त गुणों जैसे रोगांणुनाशक, एंटीसेप्टिक, दर्दनाशक, रक्तस्त्राव रोकने वाला, सूजननाशक, कवकनाशक, मरोड़नाशक, कफनाशक, दिमाग को शांत करने वाला आदि के समस्त लाभ व मात्रांए "ज्वालायुक्त यज्ञ" की अपेक्षा हजारों गुना ज्यादा होती है। यही तथ्य प्रत्यक्ष प्रमाण मे, प्रयोगों से, सत्यार्थ प्रकाश एंव अन्य ग्रथों से भी सत्यापित होता है।

समस्त आर्य विज्ञानियों से निवेदन है कि उपरोक्त तथ्यों में जो जो गलतियाँ हों एंव अपने मत को मुझे डाक, ईमेल, मोबाइल व्हाट्सअप से लिखने का कष्ट करें जिनका मैं निराकरण करुगां जिससे यज्ञ के सर्वलाभदायक प्रक्रिया पर निर्णय कर अपनाया जा सके।

– ई–5 चंद्रा अपार्टमेंट
115 कबीर मार्ग (निकट योजना भवन)
लखनऊ (उत्तर प्रदेश) –226 001
मो.:– 9451 73 4531,
email-
vedpragupta@rediffmail.com

आर्य समाज टाण्डा का 127वाँ वार्षिकोत्सव समारोह
दिनांक 20 से 23 नवम्बर, 2018 तक

आर्य समाज टाण्डा का 127वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 20 से 23 नवम्बर, 2018 तक डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, अम्बेडकरनगर, उत्तर प्रदेश में हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी, डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री अमेठी, पं. दीनानाथ शास्त्री लखनऊ, आचार्य नागेन्द्र शास्त्री अयोध्या, डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी (राष्ट्र कवि), पं. संजय सत्यार्थी पटना, श्री कल्याण वेदी भजनोपदेशक, श्री युगल किशोर शास्त्री भजनोपदेशक, स्वामी वीरेन्द्र सरस्वती लखनऊ, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य हरियाणा, आचार्य सत्य प्रकाश आर्य बाराबंकी, डॉ. विधानचन्द्र आर्य रामनगर, पं. विज्ञमित्र शास्त्री, पं. देव नारायण पाठक, आचार्य पूर्ण प्रकाश शास्त्री सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति पधार रहे हैं।

इस अवसर पर आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय के ब्रह्मत्व में चतुर्वेद महायज्ञ का भव्य आयोजन किया गया है। 20 नवम्बर को अपरान्ह 2.30 से 5 बजे तक विशाल शोभा यात्रा का आयोजन भी आकर्षण का केन्द्र रहेगा। इस अवसर पर आर्य युवा सम्मेलन, नारी सशक्तिकरण सम्मेलन, वेद सम्मेलन सहित अनेकों अन्य कार्यक्रम आयोजित किये गये। इस पुण्य अवसर पर सपरिवार इष्ट मित्रों, परिजनों व बन्धु–बांधवों सहित पधारकर धर्म लाभ उठायें।

निवेदक

आनन्द कुमार आर्य
प्रधान

योगेश कुमार आर्य
मंत्री

राम सूरत मौर्य
कोषाध्यक्ष

समारोह स्थल

डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा अम्बेडकर नगर, उत्तर प्रदेश–224190
दूरभाष :– 05273–222276, 225299, मो.:–9331866618, 9415460200, 9452604560

आर्य संन्यासी वृन्द, विद्वत् मण्डल, उपदेशकगण, आर्य समाजों तथा सभाओं के पदाधिकारी एवं समस्त आर्य भाई बहनों के नाम

आर्य समाज के भावी कार्यक्रमों से सम्बन्धित एक अपील

विचार करें समाज के स्वर्णिम भूतकाल का, याद करो जिसका प्रारम्भ हुआ ऋषि के बलिदान से, महान तपस्वी विद्वानों के वैचारिक शोध मार्ग से प्रेरणा पाकर हम सब आत्मिक सुख से तृप्त हुए हैं। अतः हम सबका दायित्व है कि वर्तमान राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान करके सफल सुखद भविष्य निर्माण करें।

किसी भी राष्ट्रीय और मानवीय उन्नति का प्रतीक ऐतिहासिक धरोहर धर्म–संस्कृति होती है। भौतिक विकास और मानव शक्ति राष्ट्र का शरीर है, तो सत्य सनातन वैदिक धर्म संस्कृति ही ''भारत माता'' उसकी आत्मा है। अन्न, वस्त्र, भोग ऐश्वर्य साधन तो सभी को सदैव प्राप्त रहते हैं, संस्कृति परिवर्तन ही गुलामी होती है। मुगलों व अंग्रेजों की पराधीनता में वैचारिक परिवर्तन से उत्पन्न परस्पर विरोध, द्वेष ही वर्तमान दुःखों का कारण है। स्वसंस्कृति बिना भौतिक, उन्नतिशील राष्ट्र भी प्रायः छल, कपट, लोभ से भ्रष्ट, ईर्ष्या दोष युक्त वस्तु मात्र रह जाता है। वर्तमान में राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय अनेकों साम्प्रदायिक, पक्षपाती संस्थाएँ प्रभु प्रदत्त धर्म, न्याय, दया, करुणा, प्रेम, सत्य, अहिंसा, ज्ञान सेवादि श्रद्धामयी मानव भावनाओं का शोषण कर रही है। अधर्म और स्वार्थ से प्रेरित व्यवहार द्वारा जाति, भाषा, क्षेत्र, धर्म नाम पर साम्प्रदायिक आतंक से मानवता के विनाश को आमन्त्रित कर रही है। महाभारत के पतन से दुःखी महर्षि दयानन्द जी ने संसार को पुनः वैदिक संस्कृति का मार्ग दिखाया और सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध वैचारिक आन्दोलनों को प्रारम्भ किया। भारत (आर्यावर्त) की उन्नति हेतु कहा ''एक धर्म, एक भाषा, एक लक्ष्य बनाये बिना भारत का पूर्ण हित और जातीय उन्नति का होना दुष्कर है। सब उन्नतियों का केन्द्र स्थान एक्य है, जहाँ भाषा, भाव, भावना में एकता आ जाये वहाँ सारे सुख एक–एक करके सागर में नदियों की भांति प्रवेश करने लगते हैं'' भारत ही नहीं संसार के हितैषीजन आर्य समाज क्षमता से परिचित समाज का नेतृत्व चाहते हैं। आर्य समाज से प्रभावित यूरोपीय विद्वान ''एन्ड्रजैक्सन डेविस'' ने लिखा आर्य समाज की भट्टी में सुलगती–धधकती आग सारे संसार के पाखण्ड को भस्म कर देगी, किन्तु आज हम पद–प्रतिष्ठा, स्वार्थवश ऋषि–महर्षियों के विचारों को भुला बैठे हैं और याद रह गई अक्रांति, इस्लाम से मिली हिन्दू, अंग्रेजों से मिली इण्डिया नाम की संस्कृति और स्वराष्ट्र में जैन, बौद्धों आदि स्वार्थियों से प्रारम्भ सनातन नहीं नित्य नवीन मूर्तिपूजा जो अन्धविश्वास, पाखण्ड तंत्र की संस्कृति का मूल है। ऋषि सन्देशानुसार अध्यात्म ही नहीं, भौतिक उन्नति में भी सबसे बड़ी बाधा अविद्या है जो सब दुःखों का मूल है। अतः हमें सामाजिक चरित्र व राष्ट्रीय उन्नति हेतु, वैदिक शिक्षा संस्कृति को प्राथमिकता देनी होगी। यथा –

1. लड़के, लड़कियों के स्कूल अलग–अलग हो जिनकी मध्य दूरी 2–3 किलोमीटर हो। लड़कियों को शिक्षिका व लड़कों को शिक्षक ही पढ़ावें।
2. प्रथम कक्षा प्रवेश–पत्र में जाति, धर्म नाम, सम्प्रदाय घोषणा को बन्द किया जाये। मात्र जन्म स्थान, पता व माता–पिता का नाम अंकित कराया जाये, जिससे जातीय झगड़े व आरक्षण विवाद समाप्त होगा।
3. राष्ट्रभाषा हिन्दी को सभी प्रान्तों में अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाये। अंग्रेजी को स्वैच्छिक विषय के रूप में पढ़ाया जाये। स्वतंत्र, स्वभाषा, स्वधर्म संस्कृति बिना स्वराज्य अधूरा है।
4. सभी शिक्षा निःशुल्क, प्रान्तीय व राष्ट्रीय अनुदान पर आश्रित हो। उपरोक्त सुधारों से जाति, सम्प्रदाय, क्षेत्र, भाषा, सीमा भेदभाव मिटेगा। आरक्षण समस्या का समाधान होगा, योग्यता का सम्मान, राष्ट्रीय विकास का मार्ग प्रशस्त होगा।
5. शिक्षा का पाठ्यक्रम सम्पूर्ण राष्ट्र में एक समान होना चाहिए। भूगोल अतिरिक्त गणित, कृषि, औषध, विज्ञान, आकाशीय ज्योतिष, खगोलशास्त्र आदि विषयों का भारत ही नहीं, संसार में पाठ्यक्रम एक समान है। आत्मिक शिक्षा, शिष्टाचार व भौतिक उन्नति की आवश्यकता में सारा संसार एकमत है।
6. पाठ्यक्रम प्रान्तीय भाषाओं में हो किन्तु लेखन देवनागरी लिपि में किया जाये, क्योंकि शब्दरूपी आत्मा का शरीर लिपि है। यही लिपि एकता वैचारिक संस्कृति और राष्ट्रीय एकता का आधार है। (उदाहरणार्थ रूस गणराज्य) परिणामस्वरूप राष्ट्र में सभी परीक्षाओं का परीक्षा पत्र एक समान होगा, जो राष्ट्रीय विश्वास व प्रगति का मार्ग है।
7. विज्ञान प्रमाणित सार्वभौम आत्मिक व्यवहार धर्म, न्याय, दया, करुणा, प्रेम, सत्य, सेवा, अहिंसा, ज्ञान, शिक्षा, सदाचार की आवश्यकता में सभी एक मत हैं। अतः धर्म नाम पर साम्प्रदायिक परिवर्तन पर रोक लगाई जाये। नैतिक शिक्षा व राष्ट्रधर्म के सामंजस्य से परस्पर प्रेम बढ़ेगा और विदेशी धन का हस्तक्षेप बन्द होगा।
8. देश में नये धर्म स्थलों पर रोक लगाई जाये। पुराने धर्म स्थलों में स्कूल, प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र, जन हितार्थ व्यवस्था की जाये।
9. धर्म नाम पर दिये दान से आयकर छूट सम्बन्धित धारा–80जी को समाप्त किया जाये।
10. राष्ट्रीय अवकाश, स्वतंत्रता दिवस व गणतंत्र दिवस को ही घोषित किया जाये, अन्य नहीं।
11. सम्पूर्ण राष्ट्र में आयकर व्यवस्था एवं जी.एस.टी. भी एक समान है अतः गृह आवश्यक पदार्थों व सामान्य साधनों विद्युत, जल, ईंधन, पेट्रोल, डीजल, गैस आदि का मूल्य एवं वृद्धावस्था पेंशन आदि भत्ते भी एक समान हो।
12. प्रत्येक परिवार से एक ही व्यक्ति सरकारी सेवा में लिया जाये। प्रति 3 वर्षीय स्थानान्तरण किया जाये। भ्रष्टाचार में लिप्त पाये जाने पर सब सुविधा व सेवाकाल समाप्त किया जाये।
13. किसी भी नागरिक को तलाक, डीवोर्स का अधिकार न दिया जाये। डीवोर्स, तलाक वाद 5 वर्ष तक पुनर्विवाह प्रतिबन्धित किया जाये। मत–मतान्तर प्रावधान से दूर सभी को दो बच्चों का अधिकार, अधिक पर विशेष कर (टैक्स) लगाया जाये।

चुनाव व संसद सुझाव

1. सांसद चुनाव हेतु प्रत्याशी शिक्षा, आयु, चरित्र, योग्यता स्तर सुनिश्चित किया जाये। चुनाव निज चुनाव चिन्ह पर हो, पार्टी चिन्ह पर नहीं। यदि पार्टी स्तर पर चुनाव हो तो प्रत्याशी को दूसरे क्षेत्रों से प्रत्याशी बनाया जाये।
2. भूतपूर्व सांसद जो संसद में 70 प्रतिशत उपस्थित न रहा हो, उसे दोबारा चुनाव प्रत्याशी न बनाया जाये।
3. चुनाव आयोग प्रत्याशियों का परिचय–पत्र, कार्य योजना, घोषणा पत्र, चुनाव क्षेत्रों में वोटरों को वितरित करायें, प्रत्याशी निज प्रचार न करें। इससे शराब, प्रलोभन, जनता का निज लोभ बन्द होगा। प्रतिबन्धित होने का पालन कराया जाये। इससे चुनाव में काले धन व अपराध पर अंकुश लगाया जा सकेगा।
4. संविधान विधेयक नागरिक आत्म प्रकृति के आधार पर बने। व्यक्ति जातीय, सम्प्रदाय, भाषा, क्षेत्रवाद पर नहीं। विधेयक प्रस्ताव पर पार्टी विहिप (आदेश) जारी न किया जाये। सदस्य स्वतंत्र मतदान करें। पार्टी विहिप भी सामन्तवाद का प्रतीक है।
5. अल्पकाल समाजसेवा से सांसदों, विधायकों की पेंशन को (सरकारी कर्मचारियों की भांति) बन्द किया जाये। इससे राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का सुधार होगा।
6. सम्पूर्ण राष्ट्र में शराब, मांसाहार, नशाखोरी पर प्रतिबन्ध हो। शिक्षा, समाज उत्पीड़न, नारी रक्षा में सभी नागरिकों का परस्पर सहयोग हो।
7. जन्मना जातिवाद को छोड़ गुण, कर्म, स्वभाव, समान बल–बुद्धि के आधार पर विवाह करने वालों को आर्य समाज और सरकार भी प्रोत्साहित करें।

बन्धुओं! उपरोक्त समस्त कार्य सदाचार, त्याग, बलिदान, संगठनात्मक शक्ति से पूरे किये जा सकते हैं, किन्तु आज हम त्याग बलिदान से कोसों दूर ऋषिवर द्वारा किये आन्दोलन कार्यों से सन्तुष्ट होकर जीवनयापन हेतु वेद प्रचार को व्यवसाय बनाकर मान–प्रतिष्ठा और धन कमाने का उद्योग बना बैठे हैं। बदलते समय की वर्तमान आवश्यकताओं के अनुरूप राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान हेतु वैचारिक आन्दोलन किये बिना समाज अपनी पहचान और सम्मानीय प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं कर सकता। अतः समाज सुधार से संगठन शक्ति का विकास करके उपरोक्त व निम्न कार्यों पर विचार ही नहीं, जाति, भाषा, सम्प्रदाय, भेदभाव मिटाकर सरकार से अनुरोध करें, आवश्यकता पड़ने पर आन्दोलन भी करें।

1. 60 वर्ष आयु उपरान्त कोई समाज पदाधिकारी न बने। प्रत्येक वर्ष चुनाव में नये पदाधिकारी चुने जायें।
2. 60 वर्षीय वृद्ध वानप्रस्थी निःशुल्क शिक्षा, सुरक्षा, श्रमदान कार्यों से समाज सेवा करें।
3. संन्यासीगण, उपदेशक, भजनोपदेशक, सार्वदेशिक सभा से पंजीकृत हो। प्रचार दक्षिणा का शतांश सार्वदेशिक सभा को देवें। उनका वृद्ध जीवन दायित्व सभा लेवें। ऐसा करने से समाज संगठन में परस्पर विश्वास बढ़ेगा। ऐसा न करने वालों को प्रवचन, उपदेशक से बहिष्कृत किया जाये।
4. साप्ताहिक यज्ञ, सत्संग नगर, मोहल्लों में परिवारों के सहयोग से करें। आमंत्रण समाज करें। यज्ञ बाद गली में आवश्यकतानुसार श्रमदान किया जाये।
5. युवाओं से जनसम्पर्क करके सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका ऋषि ग्रन्थों की कक्षा लगावें। वाद–विवाद, परीक्षा बाद ऋषि ग्रन्थों को पारितोषिक स्वरूप भेंट करें।
6. शहर, चौराहों, उद्यानों, गलियों, बस स्टैण्ड, रेलवे स्टेशन, मुख्य मार्गों पर वेदों के संदेश महापुरुषों व आर्य देशभक्तों के चित्र व संदेश होर्डिंग, स्टीकर लगाये जायें।
7. पुरोहित को दीक्षा गुरु सम्मान से प्रस्तुत किया जाये। पण्डित संन्ध्या, यज्ञ मन्त्रों का अर्थ सहित पाठ करावें। शंका व प्रश्नों का विज्ञान व अध्यात्म समन्वयात्मक समाधान करें। सामाजिक सत्संग में दैनिक यज्ञ ही किया जाये। यज्ञ पद्धति सार्वदेशिक धर्मार्य सभा से अनुमोदित हो।

उपसभाएँ गाँव–गाँव तिमाही, प्रान्तीय सभा प्रतिमाह जनपदों में सम्मेलन करें। सभी समाजों के पदाधिकारी सम्मेलनों में उपस्थित रहें। सभाएँ मासिक पत्रों में आगामी कार्यक्रम सूचना पूर्व प्रचार की समीक्षा ऋषि ग्रन्थों के संदर्भ सहित प्रकाशित करावें। व्यक्ति प्रशंसा और आक्षेप न किये जायें।

आर्य बन्धुओं! हमारे धर्म ग्रन्थ, साहित्य, कार्यक्रम प्रक्रिया शैली, विचार मंथन उत्तम किन्तु प्रचार प्रस्तुतिकरण कमजोर है। इसे युग की मान्यतानुसार वर्तमान संसाधनों द्वारा प्रचारित करें।

विशेष :– समाज, सभाओं में विचार भेद को संगठन में उपस्थित रहकर दूर करें। मन भेद न रखें। ऋषि भक्तों का मन भेद बाहरी न्यायपालिका (कोर्ट) द्वारा विरोध ऋषि विरोध जानें। समाज व राष्ट्र हानि का कारण न बनें।

– विदुषांनुचर : पं. राजवीर आर्य 'वैदिक'
मुरादगनर, गाजियाबाद,
मो:–9927203015, 7599235377

गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल, मुजफ्फरनगर का 54वाँ वार्षिक महोत्सव

गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय शुक्रताल, मुजफ्फरनगर का 54वाँ वार्षिक महोत्सव 20 से 23 नवम्बर, 2018 तक गंगा के पावन तीर्थ शुक्रताल में गंगा स्नान के शुभ अवसर पर 20 नवम्बर से 23 नवम्बर, 2018 तक बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण महायज्ञ आचार्य यज्ञवीर जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न होगा। इस अवसर पर विश्व शांति सम्मेलन, शिक्षा, समाज सुधार, नशाबन्दी, व्यायाम एवं राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी चन्द्रदेव जी, स्वामी सत्यवेश जी, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, डॉ. संजीव बालियान सांसद, श्री कुंवर भारतेन्दु सांसद, डॉ. योगानन्द शास्त्री, आचार्य महावीर, श्री रघुवीर वेदालंकार, ठा. विक्रम सिंह आर्य, श्री सहदेव बेधड़क, श्री राजवीर आर्य सहित अनेकों संन्यासी, महात्मा, विद्वान, नेता तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। अधिक से अधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनायें।

– स्वामी आनन्दवेश, संस्थापक एवं संचालक

गुरुकुल भैयापुर लाढ़ौत, जिला-रोहतक का 27वाँ वार्षिक महोत्सव दिनांक 4 नवम्बर, 2018 को धूमधाम के साथ सम्पन्न

गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने किया अद्भुत व्यायाम प्रदर्शन

गुरुकुल भैयापुर लाढ़ौत का 27वाँ वार्षिक महोत्सव 4 नवम्बर, 2018 (रविवार) तद्नुसार कार्तिक शुक्ल द्वादशी 2075 को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। महोत्सव में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त स्वामी विश्वानन्द जी सरस्वती गुरुकुल विजयनगर मथुरा, आचार्य आजाद सिंह आर्य, कन्या महाविद्यालय मतलौड़ा, पानीपत, श्री प्रवीण कुमार घुसकानी, डॉ. जगदेव सिंह पूर्व प्राचार्य राजकीय महाविद्यालय रोहतक, बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या तथा राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या,

बहन दयावती आर्या रोहतक, डॉ. बलवीर सिंह शास्त्री, *श्री महावीर सिंह शास्त्री बलियाना* आदि महानुभावों ने अपने विचार प्रस्तुत किये। प्रातः 8 बजे से स्वामी विश्वानन्द जी सरस्वती के ब्रह्मत्व में यज्ञ का अनुष्ठान किया गया। तत्पश्चात् वार्षिक महोत्सव विधिवत रूप से प्रारम्भ हुआ। गुरुकुल के संस्थापक आचार्य हरिदत्त उपाध्याय की अध्यक्षता में सायं 4 बजे तक कार्यक्रम चलता रहा।

कार्यक्रम में स्वामी विश्वानन्द जी, आचार्य आजाद सिंह आर्य, डॉ. जगदेव सिंह प्राचार्य, बहन प्रवेश आर्या, बहन दयावती आर्या आदि ने अपने सारगर्भित विचार प्रस्तुत करते हुए लोगों से अपील की कि वे दीपावली पर पटाके फोड़ने के बदले सादगी के साथ मिट्टी के दीप जलाकर दीपावली मनायें। बढ़ते हुए प्रदूषण को एक चुनौती के रूप में देखते हुए सभी विद्वानों ने प्रदूषण फैलाने वाली सभी क्रियाओं से दूर रहने की प्रेरणा दी। आर्य समाज के युवा भजनोपदेशक श्री संदीप आर्य ने अपने भजनों के द्वारा कार्यक्रम को अत्यन्त उत्साहवर्द्धक बना दिया।

मुख्य वक्ता के रूप में अपने ओजस्वी विचार प्रस्तुत करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के महत्त्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति की सुरक्षा करने के लिए यह आवश्यक है कि संस्कृत और गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को विशेष महत्त्व दिया जाये। स्वामी जी ने स्पष्ट किया कि वर्तमान समय में अनेक प्रकार के प्रदूषण समाज में फैल रहे हैं। आज जहाँ खाद्य पदार्थों में मिलावट से समस्त खाद्य पदार्थ प्रदूषित हैं वहीं जल, हवा एवं पृथ्वी भी प्रदूषण की मार झेल रहे हैं। उन्होंने कहा कि सबसे अधिक विचारों का प्रदूषण भी वर्तमान समय में विशेष रूप से युवा वर्ग को प्रभावित कर रहा है। विचारों का प्रदूषण मनुष्य को पतन की ओर ले जाता है। अतः आवश्यकता है कि वैचारिक प्रदूषण से दूर रहने के लिए उच्च संस्कार प्राप्त करने पर महत्त्व दिया जाये। खाद्य पदार्थों में मिलावट एवं प्रदूषण को रोकने के लिए आर्गेनिक खेती एवं शुद्ध खान-पान की वस्तुओं के उत्पादन पर बल दिया जाये। इसी प्रकार जल तथा वायु के प्रदूषण को रोकने के लिए जहाँ आतिशबाजी, पटाके एवं औद्योगीकरण के माध्यम से निकल रहे विषैले जल एवं गैसों को रोकने के प्रयत्न किये जायें। जिसके लिए आवश्यकता है प्राचीन यज्ञ परम्परा को व्यापक रूप से अपनाया जाये। अधिक से अधिक पेड़ लगाये जायें तथा पृथ्वी पर स्वच्छता का विशेष अभियान चलाया जाये। उन्होंने कहा कि आर्य समाज द्वारा इन सभी प्रकार के प्रदूषणों के विरुद्ध राष्ट्रव्यापी जन-जागरण अभियान चलाया जाना

"कन्या भ्रूण हत्या महापाप भी अभिशाप भी"

मैं बेटी आंगन में बनी फूलों की एक क्यारी हूँ,
आप सब मुझे मत मारो मैं भी एक नारी हूँ।
न करे कभी भेदभाव बेटा-बेटी में हम,
बेटियाँ भी नहीं है किसी क्षेत्र में बेटों से कम।
आप सभी कुछ तो दया धर्म अपनाओ,
मुझ अजन्मी को नालियों में मत बहाओ।
मैं भी भगवान का एक वरदान हूँ,
विशाल दुनिया में एक छोटी सी पहचान हूँ।।1।।

मैं बेटी एक आशा लेकर आऊँगी,
परिवार की दरिद्रता को दूर भगाऊँगी।
माँ की कोख में मुझ पर ऐसा प्रहार ना करो,
लक्ष्मी स्वरूप कन्या पर ऐसा अत्याचार ना करो।
मेरी किलकारियाँ आंगन को चहका देगी,
फूलों की खुशबू की तरह जीवन को महका देगी।
मैं भी जीवन जीना चाहती हूँ,
धरती पर पवित्र जल पीना चाहती हूँ।।2।।

कन्या भ्रूण हत्या एक महापाप है,
जिन्दगी का विशालतम अभिशाप है।
हम सभी इस पाप को त्यागकर आगे बढ़े,
समाज में फैली कुरीतियों व बुराईयों से लड़े।
सरकार ने भी विशालतम स्तर पर अभियान चलाया है,
"बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ" को जन-मानस में समझाया है।
वर्तमान एवं आधुनिक समाज को हम जागरूक करेंगे,
"कन्या भ्रूण हत्या" समाप्ति का हम सभी प्रण भरेंगे।।3।।

– दीपक कुमार छिल्लर
म. नं.-1022, ग्राम सभा कालोनी,
सरदार पटेल झील के पास,
पूठकलां, दिल्ली-86, मो.:-9990422051

चाहिए। स्वामी जी ने गुरुकुल लाढ़ौत को सब प्रकार से सहयोग की अपील की। उन्होंने बताया कि आचार्य हरिदत्त जी ने अपनी पैतृक भूमि पर यह गुरुकुल स्थापित करके त्याग का बहुत बड़ा उदाहरण प्रस्तुत किया है। ऐसे त्यागमूर्ति, तपस्वी आचार्य को अपना तन-मन-धन से सहयोग करें ताकि गुरुकुल सर्वतोमुखी उन्नति कर सके। महोत्सव में मंच का कुशल संचालन श्री यशवीर आर्य ने किया तथा गुरुकुल के निदेशक श्री सांगवान जी एवं ब्र. तेजेन्द्र आर्य ने अन्य व्यवस्थाओं को सुन्दरता के साथ संभाला। गुरुकुल के मंत्री श्री कपूर सिंह आर्य, कोषाध्यक्ष डॉ. रोहताश आर्य, लाढ़ौत के सरपंच श्री मनजीत सिंह, भैयापुर के सरपंच श्री संजय कुमार, मा. बलजीत सिंह बहादुरगढ़, श्री रोशन लाल आर्य पूर्व सरपंच रिठाल, चौ. शिवधान प्रधान देशवाल खाप, श्री कृष्ण शास्त्री बोहर एवं श्री राजेन्द्र सिंह आर्य आदि का विशेष सहयोग रहा। ब्र. रितेश व्यायाम शिक्षक के निर्देशन में ब्रह्मचारियों द्वारा मल्लखम्भ, रस्सा योग, स्तूप आदि के प्रभावशाली कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। उनके व्यायाम प्रदर्शन से उपस्थित दर्शक मन्त्रमुग्ध हो गये। शांति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

कन्या गुरुकुल डोभी, जिला–हिसार (हरियाणा) का 11वाँ वार्षिक समारोह

3 नवम्बर, 2018 को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी अध्यक्ष एवं

हरियाणा सरकार के वित्तमंत्री कै. अभिमन्यु मुख्यअतिथि रहे

कन्या गुरुकुल डोभी, जिला–हिसार का 11वाँ वार्षिक समारोह 3 नवम्बर, 2018 को बड़े हर्षोल्लास एवं उत्साह के वातावरण में आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की तथा हरियाणा सरकार के वित्तमंत्री कै. अभिमन्यु जी मुख्यअतिथि के रूप में समारोह में पधारे। उनके अतिरिक्त प्रसिद्ध समाजसेवी श्री राजेन्द्र सिंह श्योराण, आर्य समाज नागौरी गेट, हिसार के प्रधान श्री दलवीर सिंह आर्य, गुरुकुल के संरक्षक श्री दयानन्द बेनीवाल, विदुषी श्रीमती सुमित्रा आर्या, वेद प्रचार मण्डल हिसार के प्रधान श्री रामकुमार आर्य, श्री ललित कुमार, श्री खजान सिंह पनिहार, श्री जगदीश सींवर सिरसा, श्री भूपसिंह गहलोत–सिरसा, श्री सत्यपाल अग्रवाल, श्री सत्य प्रकाश आदि महानुभाव भी मंच पर विराजमान थे।

इस अवसर पर आर्य जगत की विदुषी भजनोपदेशिका बहन अंजलि आर्या एवं युवा आर्य भजनोपदेशक श्री अजय आर्य के भजनों का प्रभावशाली कार्यक्रम होता रहा जिससे श्रोताओं को वैदिक सिद्धान्तों से परिचित होने का सौभाग्य मिला। मंच का कुशल संयोजन श्री देवदत्त शास्त्री एवं सम्पूर्ण व्यवस्था गुरुकुल के वरिष्ठ उपप्रधान श्री इन्द्रजीत आर्य ने संभाली। कन्या गुरुकुल डोभी का संचालन गुरुकुल के कुलपति एवं विशेष व्यक्तित्व के धनी श्री बलजीत सिंह आर्य की देखरेख में गुरुकुल की आचार्या बहन रश्मि जी मुख्यअधिष्ठाता श्री परमजीत शास्त्री एवं संरक्षिका श्रीमती भूला देवी आदि कर रहे थे। गुरुकुल की स्थापना 2007 में स्व. महात्मा महेन्द्र सिंह आर्य ने अपने प्रेरणा स्रोत स्व. दादाश्री चौ. रामजस आर्य एवं स्व. पिता कन्हैया सिंह बेनीवाल की प्रेरणा से की थी। उनके देहावसान के पश्चात् उनके सुपुत्र श्री बलजीत सिंह आर्य ने यह उत्तरदायित्व अपने कंधों पर लिया और गुरुकुल का सर्वतोमुखी विकास उन्हीं के कुशल नेतृत्व में हो रहा है। गुरुकुल में कई प्रान्तों की छात्राएँ शिक्षा प्राप्त कर रही हैं और विविध गतिविधियों में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करके ख्याति प्राप्त कर रही हैं।

वार्षिक समारोह में मुख्यअतिथि कै. अभिमन्यु ने अपने जीवन के विशेष अनुभव बताते हुए कहा कि मैं गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से बचपन से ही अत्यधिक प्रभावित हूँ। यद्यपि मैं स्वयं गुरुकुल में नहीं पढ़ा किन्तु गर्मी की छुट्टियों में प्रतिवर्ष मैं गुरुकुल चला जाता था और वहाँ की दिनचर्या के अनुसार गुरुकुल की सभी गतिविधियों में भाग लेता था। उन्होंने कहा कि उस समय के प्राप्त संस्कारों का प्रभाव आज तक भी मेरे मन–मस्तिष्क पर बना हुआ है और मैं इस विचार का हूँ कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में बच्चे का सर्वांगीण विकास होता है जो कि वर्तमान की स्कूली शिक्षा में सम्भव नहीं है। अध्यात्म की ऊँची विद्या को जानना और उसी के अनुरूप अपने जीवन को बनाना यह मनुष्य का उद्देश्य होता है। वर्तमान शिक्षा में आध्यात्मिक शिक्षा की व्यवस्था न होने के कारण वह अधूरी है, जबकि गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली भौतिक एवं आध्यात्मिक रूप से मनुष्य का निर्माण करती है। वित्तमंत्री महोदय ने गुरुकुल में यज्ञशाला के लिए 11 लाख रुपये की राशि तथा 50 कम्प्यूटर एवं एक कम्प्यूटर कक्ष के निर्माण करने की घोषणा की।

इस अवसर पर अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में स्वामी आर्यवेश जी ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को वर्तमान शिक्षा प्रणाली का प्रभावशाली विकल्प बताया। उन्होंने कहा कि लार्ड मैकाले द्वारा चलाई गई शिक्षा प्रणाली से बच्चे शिक्षित तो हो सकते हैं किन्तु संस्कारित नहीं हो पाते और जब तक बच्चों को अच्छे संस्कार नहीं दिये जायेंगे तब तक उनकी शिक्षा उन्हें भौतिकता की ओर ही ले जायेगी। वर्तमान समय में अनेक उदाहरण ऐसे मिलते हैं जिनमें उच्च शिक्षा प्राप्त लोग भ्रष्टाचार, अनैतिकता एवं अपयश प्राप्त कर कलंकित होते हैं। स्वामी जी ने कहा कि यदि बचपन से ही बच्चों को शिक्षा के साथ–साथ ईमानदारी, समाजसेवा, परोपकार, देशभक्ति, ईश्वरभक्ति एवं मनुष्य जीवन की सार्थकता के सम्बन्ध में विशेष ज्ञान दिया जाये और संस्कारित किया जाये तो वे ऐसे अनैतिक कार्यों से बच सकते हैं। गुरुकुल में बच्चे को माता–पिता के कुल से निकालकर गुरु के कुल में दाखिल किया जाता है और गुरु अपने शिष्यों का उसी प्रकार से शिक्षा–दीक्षा और पालन–पोषण करता है जैसा माता–पिता करते हैं। स्वामी आर्यवेश जी ने वर्तमान पीढ़ी को नैतिकता विहीन एवं केवल भौतिकवादी शिक्षा से बचाने पर बल दिया। उन्होंने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को मनुष्य एवं सम्पूर्ण मानवता के लिए उपयोगी बताया।

इस अवसर पर गुरुकुल के उपप्रधान श्री इन्द्रजीत आर्य ने मुख्यअतिथि कै. अभिमन्यु के सम्मान में अभिनन्दन पत्र पढ़कर सुनाया एवं गुरुकुल की प्रबन्धकारिणी सभा की ओर से उन्हें भेंट किया। इसी प्रकार स्वामी आर्यवेश जी को भी शॉल एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। गुरुकुल के कुलपति श्री बलजीत सिंह आर्य ने सभी आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित कर आभार व्यक्त किया। डी.एस.पी. श्री दलजीत सिंह आर्य एवं श्री परमजीत सिंह शास्त्री ने समारोह में समस्त व्यवस्थाओं को संभाला।

गुरुकुल तक्षशिला, अहमदपुर, जिला–कैथल का प्रथम वार्षिक महोत्सव

दिनांक 3–4 नवम्बर, 2018 को गुरुकुल प्रांगण में समारोह पूर्वक मनाया गया

गुरुकुल तक्षशिला, ग्राम–अहमदपुर, जिला–कैथल का प्रथम वार्षिक समारोह दिनांक 3–4 नवम्बर, 2018 को हर्षोल्लास के वातावरण में मनाया गया। इस दो दिवसीय समारोह में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी तथा स्वामी सुकराईनाथ जी महाराज 3 नवम्बर, 2018 को उद्‌घाटन सत्र में सम्मिलित हुए। उनके अतिरिक्त आर्य समाज की प्रसिद्ध भजनोपदेशिका श्रीमती संगीता आर्या एवं श्री कुलदीप भास्कर की भजन मंडलियों का

बहुत सुन्दर कार्यक्रम चलता रहा। गुरुकुल की छात्राओं के भी विविध कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। उपस्थित जनता ने पारितोषिक देकर छात्राओं का उत्साहवर्धन किया। गुरुकुल के प्रधान श्री ऋषिपाल गहलोत एवं गुरुकुल के प्रबन्धक श्री रामपाल सिंह ने अपनी टीम के साथ पूरे कार्यक्रम को बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न कराया। उन्होंने सभी आगन्तुक अतिथियों एवं अभिभावकों का स्मृति चिन्ह देकर स्वागत किया। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

अदरक एवं उसके औषधीय गुण

– डॉ. योगेन्द्र यादव

खाद्य वस्तु अदरक सम्पूर्ण भारत के हर घर में पाई जाती है। कहीं यह चाय के साथ और कहीं यह सब्जी के मसाले के रूप में, कहीं अचार के रूप में, कहीं चटनी के रूप में उपयोग में लाई जाती है। दरअसल यह एक औषधि है, जिसका थोड़ा बहुत ज्ञान इस देश के हर नागरिक को होता है। इसी कारण यह घर में उपलब्ध होती है। यदि हम तत्त्वों के आधार पर इसका विघटन करें तो इसमें 80.9 प्रतिशत पानी, 2.3 प्रतिशत प्रोटीन, 0.9 प्रतिशत वसा, 1.2 प्रतिशत खनिज, 2.4 प्रतिशत रेशा, 12.3 प्रतिशत कार्बोहाईड्रेट पाया जाता है। इसके अतिरिक्त 20 मिलीग्राम कैल्शियम, 60 मिलीग्राम फास्फोरस, 2.6 मिलीग्राम आयरन, 6 मिलीग्राम विटामिन सी और अल्प मात्रा में विटामिन बी काम्प्लेक्स पायी जाती है। आयुर्वेद के अनुसार अदरक गुरु, तीक्ष्ण, उष्ण वीर्य, अग्निदीपक, कटु रस युक्त, मलभेदक, रक्ष, वायु, वात और कफनाशक होता है। इसी कारण अदरक का सेवन करने वाले का शरीर चुस्त होता है। स्मरण शक्ति में वृद्धि होती है। पेट साफ होता है। दस्त को गाढ़ा बनाती है। इसीलिए इसे अतिसार की रामबाण औषधि माना गया है। इसे चूसने से पाचन क्रिया सक्रिय होती है। अब हम इसके औषधि गुणों का वर्णन करेंगे।

एसिडिटी में लाभदायक :– अदरक को यदि कुछ अन्य आयुर्वेदिक गुणवाले खाद्य पदार्थों के साथ मिला दिया जाये, तो यह एसिडिटी में बहुत ही लाभकारी हो सकती है। अदरक के 6 ग्राम रस को प्याज के 12 ग्राम रस के साथ मिलाकर उसमें एक रत्ती हींग और थोड़ा सा नमक मिलाकर बने पेय पदार्थ को पानी के साथ पीने पर अपच से उत्पन्न एसिडिटी दूर हो जाती है। जब तक लाभ न हो जाये, हर दो घंटे पर यह पेय पीते रहना चाहिए।

अनार के रस और अदरक के रस को बराबर मात्रा में मिलाकर दिन में 4–5 बार देना चाहिए, इससे लाभ होता है।

तुलसी के पत्तों के रस को निकालकर अदरक के रस के साथ मिलाकर उसमें कुछ बूंदें नीबू की निचोड़ कर दें, तो एसिडिटी में लाभ होता है।

अपच में लाभदायक – एक किलो चीनी की चासनी में 250 ग्राम अदरक का रस डालकर गर्म करने के बाद बने इस अदरक के शरबत को यदि आधे कप पानी में दो चम्मच डालकर दिन में तीन–चार बार पीयें, तो अपच दूर हो जाता है। अदरक का 12 ग्राम रस में थोड़ा सा शहद मिलाकर चाटने से भी अपच दूर हो जाता है। यदि खट्टी डकारें आ रही हों तो वह भी आना बन्द हो जाती हैं।

भूख न लगने वाले रोगियों के लिए लाभदायक :– जिन रोगियों को भूख नहीं लगती, उनके लिए अदरक रामबाण औषधि का का काम करती है, धनिये की पत्ती के साथ अदरक की चटनी बनायें और फिर उसमें नीबू निचोड़कर खायें, तो भोजन में अरुचि दूर हो जाती है और भूख लगने लगती है। अदरक के बारीक टुकड़ों पर काला नमक छिड़क कर भोजन के पूर्व चूसने से भी भूख लगने लगती है। अदरक, नीबू और टमाटर का रस मिलाकर पीने से भी भूख लगने लगती है।

बदहजमी में लाभदायक :– अदरक और नीबू के एक–एक चम्मच रस को मिलाकर सोडे के साथ पीने से बदहजमी तुरन्त दूर हो जाती है। अदरक के रस में काला नमक मिलाकर चूसने से भी कुछ दिन में बदहजमी दूर हो जाती है। पुदीने की चटनी में अदरक के टुकड़े पीसकर काली मिर्च एवं स्वादानुसार नमक मिलाकर भोजन के साथ खाने से बदहजमी दूर हो जाती है।

मन्दाग्नि में लाभदायक :– अदरक एवं तुलसी के 20–20 ग्राम रस को मिलाकर दिन में दो बार पीने से मन्दाग्नि दूर हो जाती है। अदरक के रस में भीगी हुई अजवाइन को छाया में सुखाकर सुबह शाम गर्म पानी से खाने पर मन्दाग्नि दूर हो जाती है। अदरक में सेंधा नमक मिलाकर चूसने से भी मन्दाग्नि दूर हो जाती है।

अधिक प्यास में लाभदायक :– कुछ लोगों को अधिक प्यास की शिकायत होती है। चाहे जितना पानी पीयें, पर उनकी प्यास नहीं बुझती है। ऐसे रोगियों के लिए अदरक बहुत ही लाभदायक होती है। ऐसे रोगियों को अदरक के रस में थोड़ा सा शहद मिलाकर पानी के साथ पीना चाहिए, इससे उनकी यह बीमारी एक हफ्ते में ठीक हो जाती है।

आँव में लाभदायक :– जिन रोगियों को आँव की शिकायत रहती है, उनके लिए अदरक बहुत ही लाभदायक होती है। तीन भाग ठीक से कुचला हुआ अदरक और एक भाग लौंग को मिलाकर गोलियाँ बना लें, दिन में एक–एक गोली शहद के साथ लें, इससे आँव की शिकायत दूर हो जाती है।

दृष्टि दोष में सहायक :– रात को सोते समय आँख में अदरक के रस की दो–दो बूंदें डालने से दृष्टि मंदता, जाले, मोतियाबिन्द एवं आंखों का दर्द दूर हो जाता है। अदरक, नींबू, सफेद प्याज का रस बराबर–बराबर मात्रा में मिलाकर उसे 12 ग्राम गुलाब जल एवं 9 ग्राम शहद में मिलाकर छान लें, फिर सुबह शाम दो–दो बूंद आंखों में डालें, इसे लगातार डालते रहने से मोतियाबिन्द तक दूर हो जाता है।

हाई ब्लड प्रेशर में लाभदायक :– हाई ब्लड प्रेशर आजकल एक आम बीमारी हो गई है। हर दूसरा व्यक्ति इससे पीड़ित है। ऐसे रोगियों के लिए अदरक बहुत ही लाभदायक हो सकती है। अदरक के रस को शहद एवं जीरा पाउडर को एक–एक चम्मच के हिसाब से मिला लें, इस रस को दिन में दो बार लें, ब्लड प्रेशर नार्मल हो जायेगा।

अपेंडिक्स की बीमारी में लाभदायक :– अदरक अपेंडिक्स की बीमारी में भी लाभदायक होता है। 100 ग्राम लाल टमाटर पर

सेंधा नमक और अदरक का रस डालकर भोजन से पहले खाने से अपेंडिक्स रोगियों को लाभ मिलता है। इस प्रकार के रोगियों को खाने में रोटी नहीं खाना चाहिए।

कमर दर्द में लाभदायक :– आजकल बूढ़े ही नहीं, नौजवानों को भी कमर दर्द की शिकायत बनी रहती है। ऐसे रोगियों के लिए अदरक बहुत ही फायदेमंद होती है। अदरक से रस को घी या शहद में मिलाकर भूखे पेट पीने से कमर दर्द में आराम मिलता है, शूल आदि में भी यह लाभदायक होता है। अदरक का पेस्ट पीठ दर्द वाले भाग पर लगाने से आराम मिलता है। अलसी के 250 ग्राम तेल में 15 ग्राम पीसी सोंठ और चार चम्मच नमक मिलाकर गरम करें, जब तेल में धुआं उठने लगे तो उसे उतार दें। इस तेल की मालिश कमरदर्द, पीठ दर्द में लाभदाई होती है।

कान के रोग में लाभदायक :– कान के रोग में अदरक बहुत ही लाभदायक है। अदरक का रस छानकर हल्का गरम करके उसकी पांच–छः बूंदें डालने पर कान का दर्द समाप्त हो जाता है। अदरक के रस में शहद और नमक मिलाकर उसे सहने योग्य गरम कर कान में डालने से आराम मिलता है। सोठ और अफीम को तेल में पकायें और उस तेल को कान में डालने से दर्द ठीक हो जाता है।

खाँसी–जुकाम में लाभदायक :– खाँसी एक ऐसी बीमारी है, जो साल में दो–तीन बार हर किसी को अपना शिकार बना लेती है। खाँसी के रोग में अदरक बहुत ही लाभदायक होती है। अदरक के रस में पान का रस और शहद तीनों बराबर मात्रा में मिलाकर दिन में चार बार 3–3 ग्राम चढ़ाने से खांसी में तुरन्त राहत मिलती है। सोठ, पीपल और काली मिर्च बराबर मात्रा में लेकर उसका चूर्ण बना लें और उसे दिन में चार बार शहद के साथ चाटने से आराम मिलता है। सोंठ में शहद मिलाकर खाने से आराम मिलता है।

गैस रोग में लाभदायक :– अदरक और नींबू की चटनी बनायें, उसमें स्वाद के अनुसार काला नमक मिलायें, खाने के साथ चटनी के रूप में उसका उपयोग करें, इससे बहुत आराम मिलता है। यदि वायु के कारण दर्द हो तो सरसों के तेल में पीसकर सोंठ मिलाई जाये और उस तेल से मालिश की जाये, तो आराम मिलता है। अदरक, पुदीना, तुलसी और काली मिर्च का काढ़ा मिलाकर पीने से गैस की परेशानी से छुटकारा मिलता है।

गठिया बीमारी में लाभदायक :– बुढ़ापे का एक आम रोग गठिया की असहनीय परेशानी से अदरक छुटकारा दिला सकती है, यदि इसका उपयोग आयुर्वेद में निर्धारित मापदंडों के आधार पर किया जाये। अदरक को छीलकर उसके छोटे–छोटे टुकड़े करें, उसमें उसी मात्रा में मेथी दाना एवं लहसुन की कलियाँ मिला लें। ठंडा होने पर उसे छानकर एक शीशी में भर लें। जोड़ों पर जहाँ दर्द होता हो, वहाँ मालिश करें और मालिश के उपरान्त उसके ऊपर गर्म पट्टी बाँध लें, बहुत आराम मिलता है। सोंठ और देवदारू को गुड़ में मिलाकर उसकी गोली बना लें। नियमित रूप से उसका सेवन करें, इससे गठिया के दर्द में आराम मिलता है। अदरक के 200 ग्राम रस को 100 ग्राम तिल्ली के तेल में पकायें। इसे गठिया के दर्द के स्थान पर लगाने से आराम मिलता है।

दाँत के रोग में लाभदायक :– यदि दन्त रोग के कारण मसूढ़े सूज गये हों तो एक चम्मच अदरक के रस को एक कप गुनगुने पानी में चुटकी भर नमक मिलाकर दिन में तीन–चार बार कुल्ला करने से आराम मिलता है। दांत दर्द में अदरक के टुकड़े काटकर उस पर नमक बुरक कर दर्द वाले स्थान के नीचे दबाने से दर्द ठीक हो जाता है।

पुरुषों के रोग में लाभदायक :– अदरक का रस 6 ग्राम, 8 ग्राम प्याज का रस, 5 ग्राम शहद और 3 ग्राम गाय का घी मिलाकर चाटने से स्वप्नदोष नहीं होता। बचपन की बुरी आदतों के कारण आई कमजोरियों वाले रोगी को भोजन में नियमित रूप से अदरक का सेवन करना चाहिए। इससे उसकी कमजोरी दूर हो जायेगी। जिनको शीघ्र पतन की बीमारी हो, वे 6 ग्राम बादाम गिरी, 6 ग्राम काली मिर्च, 2 ग्राम सोंठ और इच्छानुसार मिश्री मिलाकर चूर्ण बना लें, शाम को साने से पहले हल्का गुनगुने दूध के साथ इसे खायें। शीघ्रपतन की बीमारी से निजात मिलेगी।

स्त्रीरोग में लाभदायक :– मासिक धर्म अनियमित होने पर अदरक को कूटकर काढ़ा बना लें, गर्म पानी के साथ उसमें शहद मिलाकर सेवन करें, तुरन्त लाभ मिलता है। यदि मासिक धर्म में जांघों में पीड़ा हो तो 6 ग्राम नीम की पत्ती का रस, 12 ग्राम अदरक के रस को पानी के साथ सेवन करने पर लाभ मिलता है। यदि किसी भी कारण से योनि में पीड़ा होती हो तो 25 ग्राम सोंठ का चूर्ण फांककर गर्म दूध पी लें, दर्द से तुरन्त निजात मिलेगी। प्रसव के कारण योनि का दर्द दूर करने के लिए इन्द्रायण की जड़ और सोंठ इन दोनों को बकरी के घी में पीसकर योनि में लेप करने से योनि का दर्द तुरन्त दूर हो जाता है। पिसी सोंठ को बकरी के गर्म दूध के साथ खाने से गर्भिणी स्त्री का बुखार दूर हो जाता है। प्रसव का दर्द शुरू होने पर 10 ग्राम सोंठ में 50 ग्राम शहद मिलाकर चटाने से प्रसव आसानी से हो जाता है।

बच्चों के रोग में लाभदायक :– बच्चों को खांसी होने पर अदरक और तुलसी के रस को गर्म करके ठंडा होने पर शहद में मिलाकर चटायें, इससे आराम मिलता है। सोंठ को घिसकर दूध के साथ पिलाने से कफ निकल जाता है। एक ग्राम अदरक के रस में नमक मिलाकर पिलाने से खांसी मिट जाती है। छोटे बच्चे को पांच से दस बूंद अदरक का रस पिलाने से हरे दस्त आना बन्द हो जाते हैं। सोंठ और नीम गिलोय के चूर्ण को सुंघने से हिचकी बन्द हो जाती है। सोंठ और गिलोय का काढ़ा पिलाने से बच्चों का बुखार उतर जाता है। अदरक का रस और तुलसी का रस मिलाकर हल्का गर्म करके फिर ठंडा करके शहद के साथ देने से बच्चों की कब्जियत, अजीर्ण, वमन, हिचकी, श्वास, खांसी, ज्वर और सर्दी में आराम मिलता है।

वैदिक नित्य कर्म विधि

– लेखक आचार्य श्री पं. हरिदेव आर्य एम.ए.

इस पुस्तक में प्रातःकाल के मन्त्र, संन्ध्या, ईश्वर स्तुति, प्रार्थना मंत्र, दैनिक यज्ञ, स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण, विशेष यज्ञ और विशेष आहुतियाँ, अमावस्या, पूर्णिमा आदि के विशेष मन्त्र, ईश्वर प्रार्थना, पचास भजन संग्रह आदि के अतिरिक्त जन्मदिन, वर्षगांठ, सगाई, गोद भरना, वर तथा बारात का स्वागत, व्यापार का शुभारम्भ, भवन शिलान्यास, क्रिया सम्बन्धी (उठाला), यात्रा–गमन, शुद्धि संस्कार पद्धति, यजुर्वेद के 40वें अध्याय से युक्त सभी आर्यों के पर्वों के मन्त्र आर्य पर्व पद्धति भी सम्मिलित है। **विशेष बात यह है कि सब मन्त्र मोटे और लाल, सभी मन्त्र अर्थ सहित और कविता पाठ में भी और प्रत्येक मंत्र के आरम्भ में ओ३म् भी मुद्रित है।** 23x36 का बड़ा साईज, आकर्षक टाईटिल तथा पृष्ठ संख्या 176, संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण मूल्य एक प्रति 175 रुपये डाक व्यय अलग होगा।

बुक मंगाते समय यदि आप सीधे राशि भेजना चाहते हैं तो निम्न खाते में राशि भेजकर दूरभाष पर सूचित करें :–

मधुर प्रकाशन
खाता संख्या–0127002100058167
IFSC Code No.- PUNB12700
पंजाब नेशनल बैंक, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

मधुर प्रकाशन
2804, गली आर्य समाज,
बाजार सीताराम, दिल्ली–110006
मो.:–9810431857

नीदरलैंड में वैदिक मंदिर अपने अंतिम निर्माण चरण में विश्व के आर्यजन इस निर्माण कार्य में दिल खोलकर सहयोग प्रदान करें

Arya Samaj Vedic Community in The Netherlands Experiencing revival
Arya Samaj Netherlands - ASAN
Finalizing the construction of a new VEDIC Temple
Fundraising Program - Request for Donation

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के उद्घोष "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" को सार्थक करने के लिए आर्य समाज अपने कदम तीव्र गति से बढ़ा रहा है। हालैंड में आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता आर्य समाज के सिद्धान्तों एवं मन्तव्यों का प्रचार तथा प्रसार करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं।

हालैंड में दी हेग नगर में स्थित आर्य समाज नीदरलैंड (आसन) ने एक भव्य आर्य समाज मंदिर की योजना बनाई है। यह मंदिर समस्त मापदण्डों को ध्यान में रखकर वास्तुशास्त्र के अनुसार निर्मित किया जा रहा है। इस विशाल और आकर्षक बहुआयामी, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक केन्द्र अनुलग्नक मंदिर भवन में जीवन के उद्देश्यों की पूर्ति करने के लिए तथा अन्य समाजोपयोगी गतिविधियों को संचालित करने के लिए विभिन्न कक्षों का निर्माण किया जायेगा। ध्यान, योग, तनाव निवारण, आयुर्वैदिक स्वास्थ्य चिकित्सा, व्यक्तित्व विकास प्रशिक्षण भव्य यज्ञशाला आदि के लिए अलग–अलग स्थान निश्चित किये गये हैं। इसके अतिरिक्त आध्यात्मिक विकास और व्यवहार से हमारी सांस्कृतिक विरासत और वैदिक शिक्षाओं के हस्तांतरण और प्रसार के लिए नये–नये अवसर और दृष्टिकोण प्रदान किये जायेंगे। इस भव्य तथा महत्त्वाकांक्षी योजना पर लगभग 12 लाख यूरो का व्यय हो चुका है। हम समस्त आर्यों तथा संस्थाओं के अधिकारियों से इस भव्य मंदिर के अंतिम निर्माण चरण के लिए दिल खोलकर दान देने की अपील करते हैं। हम हॉलैण्ड में आर्य समाज की ध्वजा को बुलन्दी तक पहुँचाने के लिए नितान्त प्रयत्नशील हैं।

बूंद–बूंद से समुद्र भर जाता है अगर हम सब अपनी पुण्य कमाई से अपनी सामर्थ्यानुसार सहयोग राशि देवें तो अंतिम निर्माण चरण कार्य अत्यन्त आसान हो जायेगा। महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं आर्य समाज के प्रचार–प्रसार के लिए इस आर्य समाज मंदिर का भव्यता के साथ निर्माण होना अत्यन्त आवश्यक है। अतः हम समस्त आर्यों से आर्य संस्थाओं से और आर्य समाज के अधिकारियों तथा सदस्यों से विनम्र निवेदन करते हैं कि आप सब अधिक से अधिक धनराशि आर्य समाज मंदिर निर्माण कार्य के लिए अवश्य देवें जिससे नीदरलैंड में आर्य समाज की गतिविधियों को पूरे यूरोप स्तर का बनाया जा सके।

आसन की प्रबन्ध समिति आपके दान के प्रति बहुत–बहुत धन्यवाद करती है।

श्री अमरेश तिवारी, अध्यक्ष, श्री आयवन रघुवर सिंह–महासचिव, श्री चान घूरबीन–कोषाध्यक्ष

वैश्विक धन संग्रहण वाले कार्यक्रम

बैंक स्थानान्तरण विवरण

धन संग्रहण कार्यक्रम के लिए बैंक स्थानांतरण विवरण आप हमारे खाते में बैंक स्थानान्तरण से दान भी कर सकते हैं। कृपया कीवर्ड सूचित करें "दान आसन मंदिर" यह विषय संकेत करें। यदि आप एक रसीद चाहते हैं तो सम्मेलन में उपस्थित आसन के कार्यकर्ता से सम्पर्क करें। आप लिख भी सकते हैं। कृपया हमें लिखें "रसीद के लिए अनुरोध है।"

खाता जानकारी

आई.एन.जी. (ING) बैंक : 81596

नगर : दी हेग

खाता धारक : आर्य समाज नेद–दी हेग आसन मंदिर निर्माण राशि (ASAN-Mandirbouwfonds) बैंक पहचानकर्ता कोड (BIC) बीआईसी INGBNL27

यूरो (€) में जमा :

IBAN यूरो : NL27 INGB 0000081596

आर्य समाज नीदरलैंड – सम्पर्क करने का विवरण आर्य समाज नीदरलैंड (आसन)

1ste Van der Kunstraat 75,2521 BA Den Haag, दी हेग, नीदरलैंड

चलभाष :– 0031 (0) 6–11694260

ईमेल :– secretariaat@asan-denhaag.nl

वैबसाइट : www.asan-denhaag.nl

1. Introduction

The Vaidik Arya Samaj Community is in the last stage of building an Arya Samaj Mandir which will be the largest in the Netherlands with a recognizable character in the spatial structure of the Hague.

Along with several other existing temples, The Hague will truly become the "Hindu City" of The Netherlands, if not the Hindu City of the mainland of Europe.

2. Planning

The Arya Samaj Netherlands (ASAN) established in the Hague had started with the construction in the Netherlands in 2013. The design will be according various principles of Vastu Shastra.

3. Objectives and Perspectives

This new temple will enable the Arya Samaj community in realizing their goals in a better way for current and future generations, in the dynamic Dutch society. From this Centre we can expand our range of activities such as : Yoga/meditation, stress reduction/prevention techniques, Ayur Vedic health-enhancing therapies and treatments, personality building training, cultural activities, etc.

It will also provide us new opportunities and perspectives for the transfer and dissemination of our cultural heritage/Vedic philosophy.

4. Global Fundraising Program - Request for Donation

ASAN exist almost 50 years in the Netherlands, and with the realization of this temple, a long cherished wish of the Dutch Hindus Aryas will be realized!

However, our ultimate wish for the construction of this temple are facing some challenges in funding because of the tense building market conditions presently. That's why we are looking for your financial support, any financial contribution is welcome. We will be very grateful for your kind support.

On behalf of the ASAN Board of Members, we appreciate your consideration to our request.

Sincerely Yours,

DRs. Amresh B. Tewarie, chairman Mr. Iwan Reghoebarsing, secretary Mr. Chan Ghoerbien, treasurer

5. Global Fundraising Program - Bank Transfer Details

Bank Transfer Details for Fundraising Program

You can make a donation by bank transfer to our account.

Please indicate the keyword "Donation Asan Temple" in the "Subject" field.

If you want to have a receipt please also write. "Receipt Requested".

Account information :

ING Bank

City : Den Haag

Account holder : Arya Samaj Ned Reg Den Haag ASAN-Mandirbouwfonds

Bank Identifier Code (BIC) : INGBNL2A

Deposit in Euro's (C) :

IBAN Euro : NL27INGB0000081596

6. Arya Samaj Netherlands - Contact Details

Arya Samaj Netherlands (ASAN),

1ste van der Kunstraat 75, 2521 BA The Hague The Netherlands

Tel : +31 (0) 6-11 694260

Email : secretariaat@asan-denhaag.nl, Website : www.asan-denhaag.nl

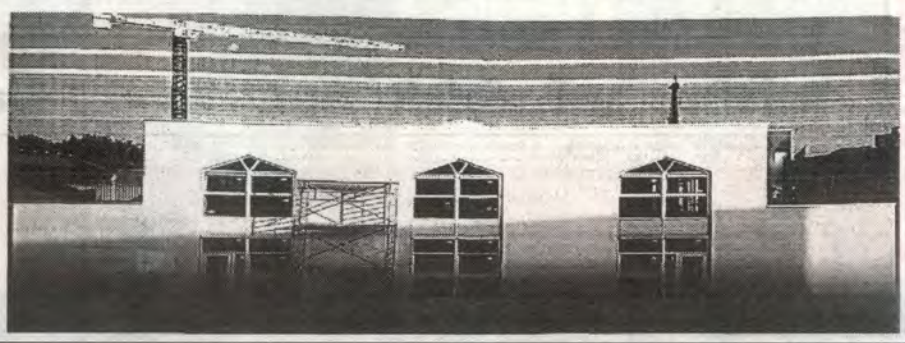

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित साहित्य

'श्रीमद्दयानन्द प्रकाश'
लेखक–स्वामी सत्यानन्द,
मूल्य 150 रुपये, पृष्ठ–455

'मनुस्मृति'
भाष्यकार पं. तुलसीराम स्वामी,
मूल्य 200 रुपये, पृष्ठ–595

उपरोक्त दोनों पुस्तकें बढ़िया कागज व प्रिंटिंग के साथ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा "महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड (रामलीला मैदान), नई दिल्ली–2 पर 25 प्रतिशत विशेष छूट पर उपलब्ध हैं। डाक से मंगाने पर एक प्रति के हिसाब से 25 रुपये डाक व्यय अतिरिक्त देना होगा।

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

लागत मूल्य 4100/- रुपये

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

4100/- रुपये का एक वेद सैट 25 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 200/- रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी।

अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।